• अहम है...

छलनी से चांद देखना...

आपने इस बात पर गौर किया है कि करवाचौथ के व्रत में महिलाएं छलनी से चांद को देखती हैं और फिर पति का चेहरा देखकर उनके हाथों से जल ग्रहण कर अपना व्रत पूरा करती हैं। आखिर करवाचौथ व्रत में छलनी से ही चांद क्यों देखा जाता है? इस परंपरा के बारे में जानने की कोशिश करते हैं। छलनी से ही क्यों देखा जाता है चांद ये परंपरा इस व्रत की कथा से जुड़ी हुई है। इस कथा में एक बहन की कहानी बतायी गई है जिसके भाईयों ने स्नेहवश उसे भोजन कराने के लिए छल से चांद दिखाया। इसके लिए उन्होंने छलनी की ओट में दीपक जलाया जो आकाश में चांद की छवि जैसा नजर आया। इससे उसका व्रत भंग हो गया। इस भूल को सुधारने के लिए उनकी बहन ने पूरे साल चतुर्थी का व्रत किया और जब दोबारा करवा चौथ का समय आया तो उन्होंने पूरे विधि विधान से इसका व्रत रखा। इस तरह उन्हें सौभाग्य

की प्राप्ति हुई। इस बार कन्या ने हाथ में छलनी लेकर चंद्र दर्शन किए थे।

छलनी से चांद देखने का रहस्य छल से बचने के लिए छलनी का इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल छलनी के जरिए बहुत बारीकी से चांद को देखा जाता है और तभी व्रत खोला जाता है।

व्रत कथा का महत्व : करवाचौथ व्रत में इसकी कथा सुनना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दौरान एक चौकी पर जल से भरा लोटा, करवे में गेहूं और उसके ढक्कन में चीनी तथा रुपए आदि रख जाते हैं।

करवाचौथ पूजा : इस पूजा में चावल, गुड़, रोली आदि सामान रखें। लोटे और करवे पर स्वास्तिक चिन्ह बनाएं। इसके बाद दोनों पर 13 बिंदियां लगाएं। अब हाथ में गेहूं के तेरह दाने लेकर कथा सुनें। कथा सुन लेने के बाद अपनी सास का आशीर्वाद लें और उन्हें भेंट दें। जब चंद्रोदय हो जाए तब उसी लोटे के जल तथा गेहूं के तेरह दाने लेकर अर्घ्य दें। फिर रोली, चावल तथा गुड़ चढ़ाएं। सभी रस्में पूरी कर लेने के बाद महिलाएं भोजन ग्रहण कर सकती हैं।

• करवा चौथ पर...

भूलकर भी न करें ये काम

सुहागिन महिलाओं को करवा चौथ का बेसब्री से इंतजार रहता है। इसके पीछे वजह भी कई है। पूरे साल वे इस खास दिन के लिए तैयारियां करती हैं। उन्हें सजने संवरने की पूरी छूट होती है। इस दिन विवाहित महिलाओं द्वारा सोलह शृंगार करना महत्वपूर्ण माना जाता है। इस व्रत के नियमों की सही जानकारी होना बहुत जरूरी है। इस दिन आपके द्वारा की गयी कोई एक गलती आपके व्रत के पूरे प्रयास को खत्म कर सकती है।

⏩ पूरे दिन व्रत का समय जल्दी गुजारने के लिए कई महिलाएं सिलाई-कढ़ाई का काम करने लगती हैं। कुछ तो बुनाई के काम में खुद को व्यस्त कर लेती हैं। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी ना करें। करवा चौथ के दिन ये काम प्रतिबंधित माने गए हैं।

⏩ समय व्यतीत करने के लिए कुछ महिलाएं ताश के पत्तों का सहारा लेती हैं लेकिन व्रत के दिन ऐसा ना करें।

⏩ आज के दिन सुहाग की कोई भी चीज कूड़े में ना फेंके। इससे व्रत का फल नहीं मिलता।

⏩ पूजा के लिए तैयार होते वक्त यदि चूड़ियां टूट जाये तो उन्हें बहते जल में प्रवाहित कर दें। घर में ना रखें, अशुभ होता है।

⏩ पूजा के दौरान आपके वस्त्रों का रंग मायने रखता है। इस दिन व्रत करने वाली महिलाएं काले रंग के कपड़ों का इस्तेमाल ना करें। इसके अलावा आप सफेद रंग भी ना लें। शादीशुदा महिलाओं के लिए काला रंग अच्छा नहीं माना जाता है। किसी पूजा पाठ के मौके पर आप काले और सफेद रंग के कपड़े ना पहनें। सफेद चीजें जैसे दूध, दही या चावल का दान ना करें।

⏩ इस दिन कैंची का प्रयोग भी बहुत अशुभ माना जाता है। घर में कैंची का इस्तेमाल आम बात है लेकिन करवा चौथ के दिन कपड़े ना काटें। हो सके तो एक दिन के लिए इसे कहीं छिपा कर रख दें ताकि आपकी नजर भी कैंची पर ना पड़े।

⏩ हमेशा से ही बड़ों का सम्मान करना सिखाया जाता है। व्रत के दिन तो खासतौर से इस नियम का पालन करें और अपनों से बड़ों का अपमान ना करें।

⏩ किसी के लिए बुरा न सोचें न ही किसी की चुगली करें। किसी की पीठ पीछे बुराई करने के बजाय धार्मिक संगीत सुनकर वक्त बिताएं। दिन भर अपने पति के बारे में सोचें। मन में किसी और का ख्याल भी ना लाएं।

⏩ पूरे दिन उपवास के बाद तामसिक भोजन बिल्कुल ना करें। किसी भी तरह के नशे से दूर रहें और धूम्रपान भी ना करें।

⏩ ये व्रत आप अपने पति के लिए कर रही हैं तो उनसे प्रेम से बात करें। उनका अपमान करने का विचार भी मन में ना लाएं।

• शुभ है...

मिट्टी का करवा ...

करवा बनाने के लिए सबसे पहले मिट्टी के साथ जल मिलाया जाता है। मिट्टी और पानी क्रमश: भूमि और जल का प्रतीक हैं। करवे का आकार दे देने के बाद इसे मजबूत करने के लिए धूप और हवा में रखा जाता है ताकि ये जल्दी सूख जाए, ये आकाश और वायु का प्रतीक हुए। इसके बाद करवे को आग में तपा कर पक्का किया जाता है जो अग्नि का प्रतीक है। एक करवा तैयार करने में पांचों तत्वों का इस्तेमाल किया जाता है। सृष्टि के पांचों तत्वों से मिलकर बने होने के कारण मिट्टी के करवे का महत्व बढ़ जाता है और स्टेनलेस स्टील के करवे से ज्यादा खास माना जाता है। पांचों तत्वों से मिलता है लाभ चांद के उदय होने और दर्शन हो जाने के बाद व्रत के समापन के समय पति अपनी पत्नी को मिट्टी के करवे से पानी पिलाता है और इस तरह पांचों तत्वों की मौजूदगी में दोनों ही अपने खुशहाल वैवाहिक जीवन की प्रार्थना करते हैं।

मिट्टी के बरतन में पानी पीना सेहत के लिहाज से भी बहुत अच्छा माना जाता है। मौजूदा समय में कई लोग स्टेनलेस स्टील से बने पात्र से पानी पीते हैं लेकिन कोशिश करें कि आप मिट्टी का करवा ही लाएं।

• मान्यताएं...

मान्यता है कि इस दिन जीव हत्या करने से पति के जीवन पर संकट आते हैं, इसलिए इस दिन किसी भी तरह की हिंसात्मक गतिविधि नहीं करनी चाहिए। कहते हैं कि करवा चौथ के दिन चंद्रोदय के बाद चंद्रमा को अर्घ्य देकर ही व्रत तोड़ना चाहिए। इसके अलावा ऐसी मान्यता है कि शाम के वक्त भी टूटा हुआ अन्न नहीं खाना चाहिए। मान्यता है व्रत नियम का पालन करने वाली व्रती महिलाओं को सदा सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद प्राप्त होता है।